

वार्तालाप.437, हैदराबाद-2 (आं.प्र.), दिनांक.10.11.07
Disc.CD No.437, dt. 10.11.07, Hyderabad-2 (Andhra Pradesh)

समय – 12.17-14.17

जिज्ञासु – बाबा जिसको थर्ड क्लास मुरली कहते हैं, कागज की मुरली उसमें कहा गया है कि मैं रूह का बाप हूँ आत्मा ही पतित बनती है आत्मा ही पावन बनती है। मैं आत्मा को ही पवित्र बनाता हूँ शरीर को पवित्र नहीं बनाता हूँ। तो फिर बाबा अपने एडवांस नॉलेज में कहते हैं। तुम्हारे लिये है सर्प का मिसाल। तुम्हारे लिये है कछुए का मिसाल। ये किनके लिये कहा गया है?

बाबा – तो आत्माओं के लिये ही है। आत्माएं ही शरीर रूपी चोला धारण करती हैं।

जिज्ञासु – पर बाबा तो कहते हैं कि इस शरीर सहित तुम वैकुण्ठ जाओगे।

बाबा – हाँ। सर्प, सर्प अपना चोला छोड़ देता है। पुराना चोला छोड़ देता है तो नया चोला धारण करता है ना।

जिज्ञासु – करता है।

बाबा – मर तो नहीं जाता? वैसे यहां भी मिसाल है।

Time: 12.17-14.17

Someone asked: Baba in the murli printed on paper which is called the third class murli, it is said that I am the Father of the soul, the soul itself becomes sinful and the soul itself becomes pure. I make the soul pure. I do not make the body pure. So, Baba, in our advanced knowledge it is said that the example of snake is applicable to you. The example of tortoise is applicable to you. For whom has it been said?

Baba replied: It has been said for the souls. The souls themselves take up a body-like costume.

Someone asked: But Baba says that you will go to heaven with this body.

Baba replied: Yes, a snake leaves its skin. It leaves its old skin and takes up a new one, doesn't it?

Someone asked: It does.

Baba replied: It doesn't die. Similarly, that example applies here.

जिज्ञासु – मगर शरीर पवित्र बने बगैर स्वर्ग में तो नहीं पहुंच सकते हैं ना।

बाबा – कुछ आत्मायें पहुंचेगी नहीं तो नये बच्चे, राधा कृष्ण जैसे बच्चों का जन्म कैसे होगा?

जिज्ञासु – माना उसके लिये भी विकार जरूरी है।

बाबा – विकार जरूरी है? माना तुम्हारी बुद्धि में यह बैठा हुआ है कि विकारों से ही सतयुग में बच्चे पैदा होंगे। उनका फाउन्डेशन लगेगा।

जिज्ञासु – नहीं, नहीं, बाबा ने कहा है – काम विकार सतयुग में होता है मगर वो अंग काम नहीं करेगा।

बाबा – हां जी। होई है कामो अनंग।

Someone asked: But we cannot reach heaven without the pure body, can we?

Baba replied: If some souls do not reach (heaven), then how will the new children like Radha and Krishna take birth?

Someone asked: Does it mean that lust is required even for that?

Baba replied: Is lust necessary? It means that it is in your intellect that the children will be born through lust in the Golden Age, their foundation will be laid.

Someone asked: No, no. Baba has said that the vice of lust exists in the Golden Age, but that organ will not work.

Baba said: Yes. Let the organ of lust not work!

जिज्ञासु – माना वो विकार तो सूक्ष्म रूप में तो होता ही है न ?

बाबा – अंग होगा, नहीं।

जिज्ञासु – काम नहीं करेगा।

बाबा – लेकिन वो अंग काम नहीं करेगा। वो भ्रष्टाचारी अंग नहीं होगा। श्रेष्ठाचारी अंग होंगे लेकिन उनसे भी उपर एक ऐसा इन्द्रिय है जो बिल्कुल देखने में ही नहीं आती है – उसको कहते हैं मन। मन ही ऐसा सात्विक बन जावेगा जिससे वाइब्रेशन से बच्चों की पैदाइश होगी। वो संगमयुग में होगी। सतयुग में नहीं होगी।

जिज्ञासु – मगर पढ़ाई तो 2036 तक चलेगी ना।

बाबा – जब तक जीना है तब तक पीना है।

Someone said: Does it mean that the vice exists in a subtle form anyway?

Baba replied: Not that the organ will not exist.

Someone said: It will not function.

Baba replied: But that organ will not function. That unrighteous organ will not exist. The righteous organs will exist but there is an organ higher than them which is not visible at all. It is called the mind. The mind itself will become so pure that the children will be born through vibrations. That will take place in the confluence Age, not in the Golden Age.

Someone asked: But the studies will continue up to 2036, won't it?

Baba replied: Until we are alive, we have to drink (the water of knowledge).

समय – 14.20 – 15.00

जिज्ञासु – बाबा, अबलाओं के अत्याचार का अंत नहीं है?

बाबा – अंत क्यों नहीं है? भगवान आया हुआ है। भगवान आया है कि नहीं आया है?

जिज्ञासु – आ गया।

बाबा – तो अति का अंत करने वाला है कि नहीं?

जिज्ञासु – सारे पेपर में रोज अत्याचार के बारे में पढ़ते हैं।

बाबा – इसका मतलब है कि अभी सौ परसेंट अत्याचार नहीं हुआ है। सौ परसेंट अत्याचार जब होता है, तो अति का अंत हो जाता है।

Time: 14.20-15.00

Someone asked: Baba is there no end to the atrocities on the weaker sex (women)?

Baba replied: Why is there no end? God has come. Has God come or not?

Someone asked: He has come.

Baba replied: So, isn't He the one who puts an end to the extremity?

Someone asked: We read about the atrocities in all the (news) papers daily.

Baba replied: It means that hundred percent atrocities have not been committed so far. When hundred percent atrocities are committed, then the extremity ends.

जिज्ञासु – बाबा, कृष्ण का जितना गायन है उसके मां-बाप को नहीं है बोलकर मुरली में आया है।

बाबा – हां जी।

जिज्ञासु – क्यों बाबा ऐसा?

बाबा – हां, इसलिये है कि कृष्ण जो हम जन्म दिखाते हैं शास्त्रों में, वो संगमयुग का बच्चे के रूप में पांच तत्वों वाला कृष्ण है या बेहद के कृष्ण की बात है? जो बेहद का कृष्ण है संगमयुगी कृष्ण जिसके द्वारा बाप प्रत्यक्ष होते हैं वो संगमयुगी कृष्ण को जन्म देने वाले जो मां-बाप हैं, जो गर्भ में भी प्रत्यक्ष करते हैं, और प्रकटिकल में बाद में भी प्रत्यक्ष करते हैं। वो निमित्त बनते हैं, जो अव्यक्त वाणी में बोला है, कि विश्वकिशोर भाऊ, राजधानी की स्थापना

में विशेष सहयोगी है। इसका मतलब विश्वकिशोर भाउ जिन्होंने शरीर छोड़ दिया है वो कोई न कोई में प्रवेश करके पार्ट बजा रहे हैं ना। तो जिसमें प्रवेश करके पार्ट बजाय रहे हैं वो ही कृष्ण को प्रत्यक्ष करनेवाला बाप हुआ। और उसकी सहयोगिनी शक्ति मां हुई। संगमयुगी कृष्ण है, उसको प्रत्यक्ष करनेवाला मां-बाप वो ही हैं।....

Someone asked: Baba, it is mentioned in the Murli that Krishna's parents are not as famous as him.

Baba replied: Yes.

Someone asked: Why is it so Baba?

Baba replied: Yes, it is like this because the birth of Krishna which we describe in the scriptures, is it the Krishna of the Confluence Age in the form of a child made up of the five elements or is it a about the unlimited Krishna? The parents who give birth to the unlimited Krishna, the Confluence-aged Krishna through whom the Father is revealed, who reveal him in the womb as well as in practical later on. They become instruments, for which it has been said in the Avyakta Vani that Vishwakishore Bhau is especially cooperative in the task of establishment of the kingdom. It means that Vishwakishore Bhau, who left his body, is playing a part by entering someone or the other, isn't he? So, the one whom he enters and plays his part is the father who reveals Krishna. And his cooperative shakti (power) is the mother. There is the Confluence-aged Krishna. They themselves are the mother and the father who reveal him....

....द्विजन्मा कहा जाता है ब्राह्मणों को। संगमयुगी कृष्ण भी ब्राह्मण बच्चा है। उसके भी दो जन्म है। एक है पीपल के पत्ते पर गर्भ महल में दिखाया हुआ चित्र। वो गर्भ महल की प्रत्यक्षता है, जो अट्ठानवे की बात है। पहला जन्म है। लेकिन ब्राह्मण, पक्का ब्राह्मण तब कहा जाता है जब द्विजन्मा हो। माना कृष्ण की सोल अभी भी गीता का भगवान साकार में कौन है ये पक्की बात बुद्धि में नहीं बैठी है। ये तीन मूर्तियों का पक्का ज्ञान जब बुद्धि में बैठ जायेगा, ये यज्ञोपवीत रूपी तीन धागों का ज्ञान बुद्धि में बैठ जायेगा, तो कृष्ण बच्चे का दूसरा जन्म माने द्विजन्मा ब्राह्मण भी कहा जाएगा। और उसको प्रत्यक्ष करनेवाले जो मां-बाप है, प्रत्यक्षता रूपी जन्म देनेवाले है सेवा करके, वो बीज रूपी आत्माओं के अन्दर है।

.....Brahmins are called *dwijanma* (twice-born). The Confluence-aged Krishna is also a Brahmin child. He too takes two births. One is a picture in which he has been shown in a palace-like womb on a fig-leaf (*peepal* leaf). That is a revelation in the palace-like womb, which is an issue of 1998. That is the first birth. But someone is called a Brahmin, a *pakka* Brahmin only when he is *dwijanma* (twice born). It means that it has not yet fitted into the intellect of the soul of Krishna that who is God of the Gita in corporeal form. When this knowledge of the three persons fits into the intellect, when the knowledge of the three threads of the *yagyopavit* (holy thread) fits into the intellect, then it will be said to be the second birth of child Krishna, i.e. *Dwijanma* Brahmin. And the parents who reveal him, who cause his revelation-like birth through service are present among the seed-form souls.

समय — 28.20—29.20

जिज्ञासु — बाबा वो बताते है हिटलर और सुभाषचन्द्र बोस ने एक ही स्कूल में पढ़ाई किया जर्मनी में। इस बीजरूपी दुनिया में दोनों ने एक ही दुनिया में पढ़ाई किया होगा। माना वो जो हिटलर जो है वो आधारमूर्ती से निकलेगा या बीजरूपी दुनिया से निकलेगा ?

बाबा — जिसको सुभाषचन्द्र बोस कहते है और जिसको हिटलर नाम दिया गया है — वो 84 जन्म लेने वाली आत्मायें हैं क्या ?

जिज्ञासु — नहीं हैं।

बाबा — फिर ?

जिज्ञासु – सुभाषचन्द्र बोस भी नहीं लेता ?

बाबा – गांधीजी लेता है ?

जिज्ञासु – नहीं लेता है।

बाबा – फिर?

Time: 28.20-29.20

Someone said: Baba, they say that Hitler and Subhash Chandra Bose studied in the same school in Germany. In this seed-form world both must have studied in the same world. I mean to say, whether that Hitler will emerge from among the root-like souls (*aadhaarmoorth*) or from the seed-form world?

Baba said: Do the souls which are named as Subhash Chandra Bose and Hitler take 84 births or not?

Someone asked: No.

Baba replied: Then?

Someone said: Does Subhash Chandra Bose also not take?

Baba said: Does Gandhiji take?

Someone asked: He does not take.

Baba replied: Then?

बाबा – गांधीजी की कैटागिरी के सुभाषचंद्र हैं। सुभाष गरम दल के, गांधीजी नरम दल के।

जिज्ञासु –माना बेहद के समझ से लिया जा सकता है।

बाबा –हां बेहद को समझा जा सकता है। वो है हद के गांधीजी और सुभाषचंद्र बोस। और यहां है बेहद के गांधीजी और बेहद के सुभाष।

Baba : Subhash Chandra belongs to the category of Gandhiji (contemporaries). Subhash belongs to the extremist group and Gandhiji to the moderate group.

Someone said: ...it means, here can consider it in an unlimited sense.

Baba said: Yes, it can be understood in an unlimited sense. They are Gandhiji and Subhash Chandra Bose in the limited sense and here Gandhiji and Subhash are in an unlimited sense.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.